5 लोकगीत

- भगवतशरण उपाध्याय

उन्मुखीकरण

मेहंदी है रचने वाली,
हाथों में गहरी लाली।
कहें सखियाँ, अब कलियाँ
हाथों में खिलने वाली हैं।
तेरे मन को, जीवन को,
नयी खुशियाँ मिलने वाली हैं।।

प्रश्न

1. हाथों में क्या रचनेवाली है?
2. इस तरह के गीतों को क्या कहा जाता है?
3. किन-किन संदर्भों में लोकगीत गाये जाते हैं?

उद्देश्य

छात्रों को निबंध लिखने की प्रेरणा देते हुए निबंध शैली से अवगत कराना, भाषा के मनोरंजक रूप से छात्रों की अभिरुचियों, दक्षताओं के साथ-साथ उनका सर्वांगीण विकास करना और लोकगीतों के सृजन के लिए प्रेरित करना इस पाठ का उद्देश्य है।

विधा विशेष

'लोकगीत' निबंध पाठ है। 'निबंध' का अर्थ है- ''बाँधना''। सुंदर और उचित शब्दों के द्वारा भावों की प्रस्तुति ही निबंध है। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार निबंध ''गद्य की कसौटी'' है।

लेखक परिचय

भगवतशरण उपाध्याय हिंदी साहित्य के सुपरिचित रचनाकार हैं। इनका जन्म सन् 1910 में हुआ। इन्होंने कहानी, कविता, रिपोर्ताज, निबंध, बाल-साहित्य में अपनी विशेष छाप छोड़ी है। *विश्व साहित्य की रूपरेखा, कालिदास का भारत, ठूँठा आम, गंगा गोदावरी* आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *हमारी संस्कृति में लोकगीत और संगीत का अटूट संबंध है। मनोरंजन की दुनिया में आज भी लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। गीत-संगीत के बिना हमारा मन रसा से नीरस हो जाता है, प्रस्तुत निबंध में भारतीय लोकगीत का वर्णन बड़े ही सुंदर ढंग से किया गया है।*

लोकगीत अपनी लोच, ताज़गी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न हैं। लोकगीत सीधे जनता के संगीत हैं। घर, गाँव और नगर की जनता के गीत हैं ये। इनके लिए साधना की ज़रूरत नहीं होती। त्यौहारों और विशेष अवसरों पर ये गाये जाते हैं। सदा से ये गाये जाते रहे हैं और इनके रचनेवाले भी अधिकतर गाँव के लोग ही हैं। स्त्रियों ने भी इनकी रचना में विशेष भाग लिया है। ये गीत बाजों की मदद के बिना ही या साधारण ढोलक, झाँझ, करताल, बाँसुरी आदि की मदद से गाये जाते हैं।

एक समय था जब शास्त्रीय संगीत के सामने इनको हेय समझा जाता था। अभी हाल तक इनकी बड़ी उपेक्षा की जाती थी। पर इधर साधारण जनता की ओर जो लोगों की नज़र फिरी है तो साहित्य और कला के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक-साहित्य और लोकगीतों के संग्रह पर कमर बाँधी है और इस प्रकार के अनेक संग्रह अब तक प्रकाशित हो गये हैं।

लोकगीतों के कई प्रकार हैं। इनका एक प्रकार तो बड़ा ही ओजस्वी और सजीव है। यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है। मध्य प्रदेश, दक्कन, छोटा नागपुर में गोंड-खांड, भील-संथाल आदि फैले हुए हैं। इनके गीत और नाच अधिकतर साथ-साथ और बड़े-बड़े दलों में गाये और नाचे जाते हैं। बीस-बीस, तीस-तीस आदमियों और औरतों के दल एक साथ या एक-दूसरे के जवाब में गाते हैं, दिशाएँ गूँज उठती हैं।

प्रश्न

1. लोकगीत के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. लोकगीत और संगीत का क्या संबंध है?
3. 'पहाड़ी' किसे कहा जाता है?

पहाड़ियों के अपने-अपने गीत हैं। उनके अपने-अपने भिन्न रूप होते हुए भी अशास्त्रीय होने के कारण उनमें अपनी एक समान भूमि है। गढ़वाल, किन्नौर, काँगड़ा आदि के अपने-अपने गीत और उन्हें गाने की अपनी-अपनी विधियाँ हैं। उनका अलग नाम ही 'पहाड़ी' पड़ गया है।

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहातों में हैं। इनका संबंध देहात की जनता से है। बड़ी जान होती है इनमें। चैता, कजरी, बारहमासा, सावन आदि मिर्ज़ापुर, बनारस और उत्तर प्रदेश के पूरबी और बिहार के पश्चिमी जिलों में गाये जाते हैं। बाउल और भतियाली बंगाल के लोकगीत हैं। पंजाब में माहिया आदि इसी प्रकार के हैं। हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल संबंधी गीत पंजाबी में और ढोला-मारू आदि के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाये जाते हैं।

इन देहाती गीतों के रचयिता कोरी कल्पना को इतना मान न देकर अपने गीतों के विषय रोज़मर्रा के बहते जीवन से लेते हैं, जिससे वे सीधे मर्म को छू लेते हैं। उनके राग भी साधारणतः

पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठ आदि हैं। कहरवा, बिरहा, धोबिया आदि देहात में बहुत गाये जाते हैं और बड़ी भीड़ आकर्षित करते हैं।

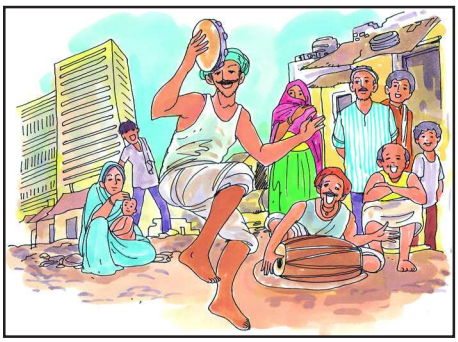

इनकी भाषा के संबंध में कहा जा चुका है कि ये सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाये जाते हैं। इसी कारण ये बड़े आह्लादकर और आनंददायक होते हैं। राग तो इन गीतों के आकर्षक होते ही हैं, इनकी समझी जा सकने वाली भाषा भी इनकी सफलता का कारण है।

भोजपुरी में क़रीब तीस-चालीस बरसों 'बिदेसिया' का प्रचार हुआ है। गाने वालों के अनेक समूह इन्हें गाते हुए देहात में फिरते हैं। उधर के जिलों में विशेषकर बिहार में बिदेसिया से बढ़कर दूसरे गाने लोकप्रिय नहीं हैं। इन गीतों में अधिकतर रसिकप्रियों और प्रियाओं की बात रहती है, परदेशी प्रेमी की और इनसे करुणा और विरह का रस बरसता है।

जंगल की जातियों आदि के भी दल-गीत होते हैं जो अधिकतर बिरहा आदि में गाये जाते हैं। पुरुष एक ओर और स्त्रियाँ दूसरी ओर एक-दूसरे के जवाब के रूप में दल बाँधकर गाते हैं और दिशाएँ गुँजा देते हैं। पर इधर कुछ काल से इस प्रकार के दलीय गायन का ह्रास हुआ है।

एक दूसरे प्रकार के बड़े लोकप्रिय गाने आल्हा के हैं। अधिकतर ये बुंदेलखंडी में गाये जाते हैं। आरंभ तो इसका चंदेल राजाओं के राजकवि जगनिक से माना जाता है जिसने आल्हा-ऊदल की वीरता का अपने महाकाव्य में बखान किया, पर निश्चय ही उसके छंद को लेकर जनबोली में उसके विषय को दूसरे देहाती कवियों ने भी समय-समय पर अपने गीतों में उतारा और ये गीत हमारे गाँवों में आज भी बहुत प्रेम से गाये जाते हैं। इन्हें गाने वाले गाँव-गाँव ढोलक लिए गाते फिरते हैं। इसी की सीमा पर उन गीतों का भी स्थान है जिन्हें नट रस्सियों पर खेल करते हुए गाते हैं। अधिकतर ये गद्य पद्यात्मक हैं और इनके अपने बोल हैं।

4. वास्तविक लोकगीत कैसे होते हैं?
5. बारहमासा लोकगीतों के बारे में आप क्या जानते हैं?
6. 'बिदेसिया' लोकगीत के बारे में आप क्या जानते हैं?

अनंत संख्या अपने देश में स्त्रियों के गीतों की है। हैं तो ये गीत भी लोकगीत ही,पर अधिकतर इन्हें औरतें ही गाती हैं। इन्हें सिरजती भी अधिकतर वही हैं। वैसे मर्द रचने वालों या गाने वालों की भी कमी नहीं है पर इन गीतों का संबंध विशेषतः स्त्रियों से हैं। इस दृष्टि से भारत इस दिशा में सभी देशों से भिन्न है क्योंकि संसार के अन्य देशों में स्त्रियों के अपने गीत मर्दों या जनगीतों से अलग और भिन्न नहीं हैं, मिले-जुले ही हैं।

त्यौहारों पर नदियों में नहाते समय के, नहाने जाते हुए राह के, विवाह के, मटकोड़, ज्यौनार के, संबंधियों के लिए प्रेमयुक्त गाली के, जन्म आदि सभी अवसरों के अलग-अलग गीत हैं, जो स्त्रियाँ गाती हैं। इन अवसरों पर कुछ आज से ही नहीं बड़े प्राचीनकाल से वे गाती रही हैं। महाकवि कालिदास आदि ने भी अपने ग्रंथों में उनके गीतों का हवाला दिया है। सोहर, बानी, सेहरा आदि उनके अनंत गानों में से कुछ हैं। वैसे तो बारहमासे पुरुषों के साथ नारियाँ भी गाती हैं।

एक विशेष बात यह है कि नारियों के गाने साधारणतः अकेले नहीं गाये जाते हैं, दल बाँधकर

गाये जाते हैं। अनेक कंठ एक साथ फूटते हैं यद्यपि अधिकतर उनमें मेल नहीं होता, फिर भी त्यौहारों और शुभ अवसरों पर वे बहुत ही भले गाते लगते हैं। गाँवों और नगरों में गायिकाएँ भी होती हैं जो विवाह, जन्म आदि के अवसरों पर गाने के लिए बुला ली जाती हैं। सभी ऋतुओं में स्त्रियाँ उल्लासित होकर दल बाँधकर गाती हैं। पर होली, बरसात की कजरी आदि तो उनकी अपनी चीज़ है, जो सुनते ही बनती है। पूरब की बोलियों में अधिकतर मैथिल-कोकिल विद्यापति के गीत गाये जाते हैं। पर सारे देश के-कश्मीर से कन्याकुमारी तक और काठियावाड़-गुजरात-राजस्थान से उड़ीसा-आंध्र तक अपने-अपने विद्यापति हैं।

स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं। अधिकतर उनके गाने के साथ नाच का भी पुट होता है। गुजरात का एक प्रकार का दलीय गायन 'गरबा' है जिसे विशेष विधि से घेरे में घूम-घूमकर औरतें गाती हैं। साथ ही लकड़ियाँ भी बजाती जाती हैं जो बाजे का काम करती हैं। इसमें नाच-गान साथ-साथ चलते हैं। वस्तुतः यह नाच ही है। सभी प्रांतों में यह लोकप्रिय हो चला है। इसी प्रकार होली के अवसर पर ब्रज में रसिया चलता है जिसे दल के दल लोग गाते हैं, स्त्रियाँ विशेष तौर पर।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनंत प्रकार हैं। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनंद के स्रोतों की कमी हो सकती है? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के अनंत संख्यक गाने के प्रतीक हैं।

7. स्त्रियों के लोकगीत कैसे होते हैं?
8. लोकगीत किसके प्रतीक हैं?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. लोकगीत ग्रामीण जनता का मनोरंजक साधन है। कैसे?
2. हिंदी या अपनी मातृभाषा का कोई लोकगीत सुनाइए।

(आ) वाक्य उचित क्रम में लिखिए।

1. लोकगीत हैं संगीत सीधे जनता के।
2. वास्तव में प्रकार हैं अनंत के गीतों के गाँव।
3. मदद ढोलक की से स्त्रियाँ हैं गाती।

(इ) दिया गया गद्यांश पढ़िए और इसके मुख्य शब्द पहचानकर लिखिए।

गाँव के गीतों के वास्तव में अनंत प्रकार हैं। जीवन जहाँ इठला-इठलाकर लहराता है, वहाँ भला आनंद के स्रोतों की कमी हो सकती है? उद्दाम जीवन के ही वहाँ के अनंत संख्यक गाने के प्रतीक हैं।

जैसे : गीत .....,

.....,

(ई) नीचे दिया गया लोकगीत पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

चलत मुसाफिर मोह लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया।
उड़-उड़ बैठी हलवैया दुकनिया
बर्फी के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया।
उड़-उड़ बैठी बजजवा दुकनिया
कपड़ा के सब रस ले लिया रे पिंजड़े वाली मुनिया।
उड़-उड़ बैठी *पनवड़िया* दुकनिया
बीड़ा के सब रस ले लियो रे पिंजड़े वाली मुनिया। – शैलेंद्र कुमार

1. चिड़िया(मुनिया) हलवे की दुकान पर किसका रस लेती है?
2. चिड़िया(मुनिया) हलवे की दुकान के बाद किस दुकान पर जाती है?
3. चिड़िया(मुनिया) पान की दुकान पर किसका रस लेती है?
4. इस गीत का मूल भाव क्या है?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. निबंध में लोकगीतों के किन पक्षों की चर्चा की गयी है? इसके मुख्यांश बिंदुओं के रूप में लिखिए।
2. जैसे-जैसे शहर फैल रहे हैं और गाँव सिकुड़ रहे हैं, लोकगीतों पर उनका क्या प्रभाव पड़ रहा है?

(आ) 'लोकगीत' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) अपने आसपास के क्षेत्र में प्रचलित किसी लोकगीत का हिंदी में अनुवाद कीजिए।

(ई) लोकगीतों में मुख्यतः ग्रामीण जनता की मार्मिक भावनाएँ हैं। अपने शब्दों में इसे सिद्ध कीजिए ।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. साधना, त्यौहार, देहात (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए।)
2. सजीव, परदेशी, शास्त्रीय (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. यह आदिवासी का संगीत है। (वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. लोकगीत, लोकतंत्र (इस तरह 'लोक' शब्द के साथ बने दो शब्द लिखिए।)
2. गायक, कवि, लेखक (लिंग बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. धर्म, मास, दिन, उत्साह ('इक' प्रत्यय जोड़कर वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(इ) इन्हें समझिए और अंतर स्पष्ट कीजिए।

1. उपेक्षा-अपेक्षा 2. कृतज्ञ-कृतघ्न 3. बहार-बाहर 4. दावत-दवात

5. पेड़ पर बड़ा पक्षी है पर उसके छोटे-छोटे पर हैं।

6. हल चलाने से मात्र ही किसान की समस्याएँ हल नहीं होतीं।

(ई) नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। उसके अनुसार दिये गये वाक्य बदलिए।

(1)

स्त्रियों के द्वारा गीत → गाये जाते हैं। / गाये जा रहे हैं। / गाये जा रहे होंगे।

1. गायक के द्वारा लोकगीत गाया जाता है।
2. अध्यापक के द्वारा पाठ पढ़ाया जाता है।

(2)

लोकगीत गाँव का संगीत है।

उदाहरण : क्या लोकगीत गाँव का संगीत है?
लोकगीत गाँव का संगीत है न!

1. स्त्रियाँ ढोलक की मदद से गाती हैं।
2. लोकगीत के कई प्रकार हैं।

परियोजना कार्य

यहाँ दिये गये चित्र ध्यान से देखिए। ये चित्र भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखे गये एक प्रहसन नाटक से संबंधित हैं। इसी नाटक को कवि सोहनलाल द्विवेदी जी ने कविता के रूप में सृजन किया है। अपने पुस्तकालय या अन्य स्रोतों से उस नाटक या कविता का संग्रह कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

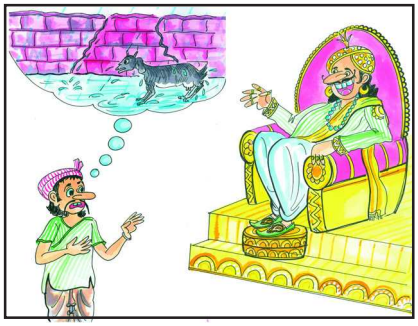
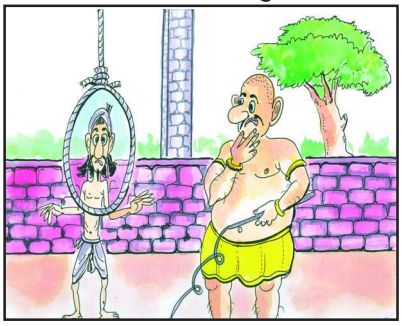
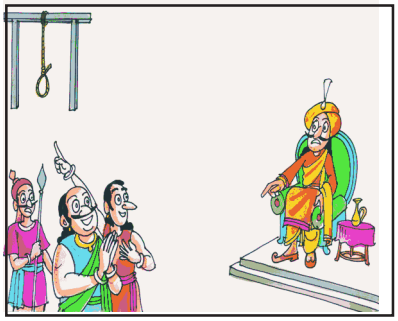

हमने इस नाटक का संकलन किया है। नाटक का नाम..... है। इसके पात्र हैं-

1. .....
2. .....
3. .....
4. ..... आदि।

पठन हेतु

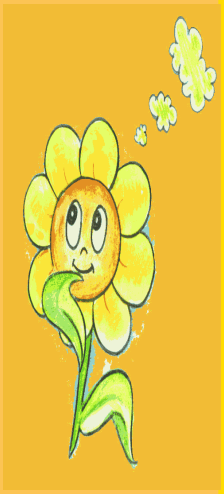

उलझन

पापा कहते बनो डॉक्टर
माँ कहती इंजीनियर!
भैया कहते इससे अच्छा
सीखो तुम कंप्यूटर!

चाचा कहते बनो प्रोफ़ेसर
चाची कहती अफ़सर
दादी कहती आगे चलकर
बनना तुम्हें कलेक्टर!

बाबा कहते फ़ौज़ में जाकर
जग में नाम कमाओ!
दीदी कहती घर में रह कर
ही उद्योग लगाओ!

सबकी अलग-अलग अभिलाषा
सबका अपना नाता!
लेकिन मेरे मन की उलझन
कोई समझ न पाता!

- सुरेंद्र विक्रम

कुछ रंग भरे फूल
कुछ खट्ठे-मीठे फल
थोड़ी बाँसुरी की धुन
थोड़ा जमुना का जल
कोई लाके मुझे दे!

एक सोना जड़ा दिन
एक रूपों भरी रात
एक फूलों भरा गीत
एक गीतों भरी बात
कोई लाके मुझे दे!

एक छाता छाँव का
एक धूप की घड़ी
एक बादलों का कोट
एक दूब की छड़ी
कोई लाके मुझे दे!

एक छुट्टी वाला दिन
एक अच्छी-सी किताब
एक मीठा-सा सवाल
एक नन्हा सा जवाब
कोई लाके मुझे दे!

- दामोदर अग्रवाल